S.V. Vedic University Series No:102
Research & Publications

Chief Editor
Prof. K.E. DEVANATHAN, Vice-Chancellor

प्रभु श्रीवेङ्कटेश्वर
(तिरुपति बालाजी)
की दिव्यकथा

मूललेखक (तेलुगु)
डॉ. के.वि. राघवाचार्युलु

अनुवादक
डॉ. दण्डिभोट्ला नागेश्वर राव

श्रीवेङ्कटेश्वरवेदविश्वविद्यालय
तिरुपति
२०१६

S.V.Vedic University Series No.102
Research & Publications

प्रधानसम्पादक
आचार्य का.इ. देवनाथन, कुलपति

प्रभु श्रीवेङ्कटेश्वर
(तिरुपति बालाजी)
की दिव्यकथा

मूललेखक (तेलुगु)
डॉ. के.वि. राघवाचार्युलु

अनुवादक
डॉ. दण्डिभोट्ला नागेश्वर राव

श्रीवेङ्कटेश्वरवेदविश्वविद्यालयः
(ति.ति.दे. प्रोत्साहितः, वि.अ.आ.अनुमोदितश्च)
तिरुपतिः
२०१६

प्रभु श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी) की दिव्यकथा

Chief Editor : **Prof. K.E. Devanathan**
Vice-Chancellor

Translator : **Dr. Dandibhotla Nageswara Rao**

Supervised by : **Dr. A. Venkata Radhe Shyam,**
Deputy Director, Faculty of Research & Publicatio

First Impression : **2016**

Copies : **500**

Price : **Rs.65/-**

ISBN : **978-93-81887-76-9**

© **Sri Venkateswara Vedic University, Tirupati, A.P.**

Produced by : **Research & Publications**
S.V.Vedic University,
Tirupati-517502 (A.P)

Published By : **The Registrar**
Sri Venkateswara Vedic University,
Tirupati-517502 (A.P)

Email : svvupublications@gmail.com
Website : www.svvedicuniversity.ac.in

Phone : +91-877-2264651, 2264404, 8330938736
Fax : +91-877-2222587

Printed at : Vijayavani Printers, Chowdepalle-517 257, Chittoor Dist., A

SRI VENKATESWARA VEDIC UNIVERSITY
Established under AP State Act No.29/2006
Sponsored by TTD and Recognized by UGC

Prof.K.E.DEVANATHAN
Vice-Chancellor

Alipiri-Chandragiri bypass Road
Tirupati-517502
Ph: 0877-2222586

पुरोवाक्

भगवान् श्रीवेङ्कटेश्वर की कृपा असीमित है। उनकी कृपा से ही सभी विषयों की प्रवृत्ति होती है। कलियुग मे प्रत्यक्ष देवता श्रीवेङ्कटेश्वर स्वामी के दर्शन करने के लिए दूर दूर से लोग तिरुमलक्षेत्रमें आते हैं। उनके मनोरथ पूर्ण होने के कारण वे बार बार पधारते हैं। अन्य लोग भी दर्शन में शामिल होते हैं। भगवान की कहानी अत्यन्त आस्वादनीय है। लोग यदि भगवान की वास्तविक जानकारी के साथ इस क्षेत्र के दर्शन करेंगे तो उनका पुण्य द्विगुणित होगा।

इस दृष्टि से डा. के.वि.राघवाचार्य जी ने तेलुगु में **श्रीवेङ्कटेश्वरवैभवमु** नाम से पुराण आदि प्रमाणों के अनुसार एक ग्रन्थ का रचना की। भक्तों के द्वारा इसका स्वीकार अच्छा हुआा। इस सन्दर्भ में हिन्दी में भी उस ग्रन्थ का अनुवाद होना जरूरी था। डा. डि.नागेश्वर राव ने इस काम का पूरण किया। वह यथावस्थित अनुवाद है। प्राय: निर्दुष्ट है। श्रीवेङ्कटेश्वरवेदविश्वविद्यालय की ओर से हम डा.नागेश्वर राव जी को अभिवन्दन और धन्यवाद देते हैं। सभी भक्त और ज्ञानार्थी जनों से प्रार्थना है कि आप इस ग्रन्थ को पढकर हमारे उद्यम को सफल बनायें।

श्रीवेङ्कटेश: प्रसीदतु।

विद्वज्जनविधेय
का.इ.देवनाथन

अनुवादक की ओर से...

"वेङ्कटाद्रि समं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेशसमो देवो न भूतो न भविष्यति।।"

कहा जाता है कि कलियुग में वेंकटाद्रि जैसा स्थल ब्रह्माण्ड में दू
नहीं है और भगवान श्री वेंकटेश्वर के समान दूसरा कोई देवता भी नहीं
ऐसे महिमान्वित प्रभु पर उपलब्ध कथा-सामग्री का संचयन पुराणों व क
से करके तेलुगु में लिखित ग्रन्थ *'श्री वेंकटेश्वर वैभवमु'* है। '**प्रभु
वेंकटेश्वर की दिव्य कथा**' नाम से उस ग्रंथ का अनुवाद हिन्दी में करने
सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। इसके लिए सर्वप्रथम मैं परमप्रभु श्री वेंकटेश्वर
प्रति नतमस्तक हूँ। तिरुपति स्थित श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय
परमादरणीय कुलपति महोदय **आचार्य डॉ. का. इ. देवनाथन जी** क
हृदय से धन्ववाद समर्पित करता हूँ जिन्होंने यह सौभाग्य मुझे प्रदान कि
श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय के अनुसंधान एवं प्रकाशन विभाग
उपनिदेशक महोदय **डॉ. अं. राधेश्याम जी** के प्रति मैं हार्दिक आभार व
करता हूँ, जिन्होंने हिन्दी अनुवाद के लिए मूलग्रंथ को सूचित किया। उ
सतत प्रोत्साहन के ही कारण यह अनुवाद-कार्य संपन्न हो सका। तेलुगु
के मूललेखक **डॉ. के.वि. राघवाचार्य जी** को भी इस संदर्भ में स
धन्यवाद समर्पित हैं।

भगवान श्री वेंकटेश्वर को सारा देश 'तिरुपति बालाजी' नाम
जानता है। भगवान की महिमा चारों ओर व्याप्त है और प्रभु के दर्शन
लिए असंख्य भक्तजन देश के कोने-कोने से आते हैं। किन्तु लगता है
भगवान की कथा प्रामाणिक रूप में देश की जनता तक उनकी भाषा
अभी नहीं पहुँची है। चूँकि हिन्दी राष्ट्र की अधिकांश जनता तक आसानी
पहुँचनेवाली भाषा है, प्रभु की दिव्य कथा उनके भक्तों के समक्ष हिन्दी
उपलब्ध कराना कुलपति महोदय का मुख्य आशय रहा है। यह अनुव
उनके आशय का ही परिणाम है।